प्रातः क्लास 10-12-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। शिव बाबा बैठ बच्चों को समझाते हैं अर्थात आप स मान बनाने का पुरुषार्थ कराते हैं। जैसे मैं ज्ञान का सागर हूंवैसे बच्चे भी बने। यह तो मीठे बच्चे जानते हैं सभी एक समान नहीं बनेंगे। पुरुषार्थ तो हरेक को अपना2 करना होता है। स्कूल में स्टुडेन्ट तो बहुत पढ़ते हैं परन्तु सभी एक समान पास विथ ऑनर नहीं होते हैं फिर भी टीचर पुरुषार्थ कराते हैं। तुम बच्चे भी पुरुषार्थ करते हो। बाप पूछते हैं तुम क्या बनेंगे। सभी कहेंगे हम आये ही हैं नर से ना0 नारी से ल0 बनने। यह तो ठीक है परन्तु अपनी एक्टिविटी भी देखो ना। बाप भी ऊंच ते ऊंच है, टीचर भी ऊंच ते ऊंच है। कोई भी मनुष्य को बाप वा टीचर नहीं कहा जाता। यह एक बाप को ही कहा जाता है बाप भी है टीचर भी है सद्गुरु भी है। इस बाप को कोई जानते नहीं। तुम बच्चे जानते हो शिव बाबा हमारा बाबा भी है टीचर भी है, सद्गुरु भी है। परन्तु वह जैसा है वैसा उनको जानना यह मुश्किल है। बाप को जानेंगे तो टीचरपना भूल जावेंगे। फिर गुरुपना भूल जावेंगे। रिगार्ड भी बच्चों को बाप का रखना है। रिगार्ड किसको कहा जाता है, बाप जो पढ़ाते हैं वह अच्छी रीत पढ़ते हैं गोया रिगार्ड रखते हैं। बाप तो बहुत मीठा है। अन्दर में बहुत खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। कापारी खुशी रहनी चाहिए। हरेक अपने से पूछे हमको ऐसी खुशी है। एक समान तो सभी की रह न सके। पढ़ाई में भी वास्ट डिफरेन्ट है। उन स्कूलों में भी कितना फर्क रहता है। वह तो कामन टीचर पढ़ाते हैं। यह तो है अनकामन। ऐसा टीचर कोई होता नहीं। किसको यह पता ही नहीं है निराकार फादर टीचर भी बनते हैं। भल श्रीकृष्ण का नाम दिया है परन्तु उनको पता ही नहीं है वह फादर कैसे हो सकता है। कृष्ण तो देवता है ना। यूं तो कृष्ण नाम बहुतों का है। परन्तु कृष्ण कहने से ही श्री कृष्ण सामने आ जावेगा। वह तो देहधारी है ना। यह शरीर तो उनका नहीं है ना। खुद कहते हैं मैं ने इस तन का लोन लिया है। पहले भी मनुष्य था, अभी भी मनुष्य है। यह भगवान है नहीं। वह तो एक ही निराकार है। अभी तुम बच्चों को कितनी राज समझाते हैं। परन्तु फिर भी फाईनल बाप समझना, टीचर समझना गुरु समझना यह हो नहीं सकता। घड़ी2 भूल जावेंगे। देहधारी तरफ बुद्धि चली जाती है। फाईनल बाप, बाप है, टीचर है, सद्गुरु है यह निश्चय बुद्धि अभी नहीं है। अभी तो भूल जाते हैं। स्टुडेन्ट कब टीचर को भूलेंगे क्या। हास्टल में जो रहते हैं वह टीचर को कब भूलेंगे क्या। स्टुडेन्ट हास्टल में रहे पड़े हैं तो पक्का होगा ना। यहां तो वह भी पक्का निश्चय नहीं है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। हास्टल में बैठे हैं तो जरूर स्टुडेन्ट है परन्तु यह पक्का निश्चय न है। फिर भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार है। जानते हैं/सभी अपने2 पुरुषार्थ अनुसार पद ले रहे हैं। उस पढ़ाई में तो फिर कोई बैरीस्टर बनते हैं, ईजीनियर बनते हैं डाक्टर बनते हैं। यहां तो तुम विश्व के मालिक बन रहे हो। तो ऐसे स्टुडेन्ट की बुद्धि कैसी होनी चाहिए। चलन, वातावरण कैसा अच्छा होना चाहिए। बाप समझाते हैं बच्चे तुमको कब रोना नहीं है। तुम विश्व के मालिक बनते हो कब या हुसैन नहीं मचानी चाहिए। या हुसैन मचाना यह है होईयेस्ट रोना। अभी तलक ऐसे भी रोते हैं। जैसे 100% तमोगुणी। जो रोते हैं उनको कहा जाता है 100% तमोगुणी। इसलिये बाप खुद कहते हैंजिन रोया तिन खोया। विश्व की ऊंच ते ऊंच बादशाही खो बैठते हैं। कहते तो हैं हम नर से ना0 बनने आये हैं परन्तु वह चलन कहां। बाप तो बहुत बड़ी मंजिल पर ले जाते हैं। कल्प2 बाप आकर बड़ी ते बड़ी मंजिल पर ले जाते हैं। ऐसे नहीं यह उस मंजिल पर पहुंचाहुआ है। नहीं। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार/सभी पुरुषार्थ कर रहे हैं। कोई तो अच्छी रीत पास हो स्कालरशिप ले लेते हैं, कोई नापास हो जाते हैं। नम्बरवार तो होते ही हैं। तुम्हारे में भी कोई तो पढ़ते हैं, कोई पढ़ते भी नहीं है। जैसे गाभरे वालों को पढ़ना अच्छा नहीं लगता है। घास काटने लिये बोलो तो खुशी से जावेंगे। उसमें स्वतंत्र लाईफ समझते हैं, पढ़ना बन्धन समझते हैं। ऐसे भी बहुत होते हैं। साहुकारों में जमीन्दार लोग भी कोई कम नहीं होते हैं। अपने को इन डिपेन्डेन्ट बड़ा खुशी से समझते हैं। नौकरी नाम तो नहीं है ना। आफीस आदि में तो मनुष्यनौकरी करते हैं ना। अभी तुम बच्चों को बाप पढ़ाते हैं विश्व का मालिक - - - - - - - - - -

बनाने। नौकरी के लिये नहीं पढ़ाते हैं। तुम तो इस पढ़ाई से विश्व के मालिक बनने वाले हो ना। बड़ी ऊंच पढ़ाई ठहरी। स्कूल है हरेक परन्तु तुम कोई नौकरी करने लिये नहीं पढ़ते हो। तो तुम विश्वके मालिक स्वतंत्र बन जाते हो। बात कितनी सहज है। एक ही पढ़ाते हैंजिससे तुम इतना ऊंच महाराजा महारानी बनते सोभी पवित्र। तुम तो कहते हो कोई भी धर्म वाला आकर पढ़े। समझेंगे यह पढ़ाई तो बहुत ऊंची है। पढ़ाई से ही विश्व के मालिक बनते हैं। यह तो बाप पढ़ाते हैं। तुम्हारी अभी कितनी विशाल बुधि बनी है। हद की बुधि से बाबा बेहद की बुधि में लाया है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। कितन खुशी रहती है हम भी औरों को विश्वका मालिक बनावें। वास्तव में नौकरी तो भल वहां भी होती हैदास दासियां नौकर आदि तो चाहिए ना। पढ़े आगे अनपढ़े भरी ढावेंगे। इसलिये बाप कहते हैं ~~इस=सब=समझे~~ अच्छी रीत पढ़ो तो तुम यह बन सकते हो। परन्तु पढ़ेंगे नहीं तो क्या बनेंगे। न पढ़ते हैं तो फिर बाप को इतना रिगार्ड से याद भी नहीं करते हैं। बाप कहते हैं जितना तुम याद करेंगे तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और तुम यह बनेंगे। कहेंगे बाबा जैसे आप चलाओ। बाप भी मत तो इन द्वारा ही देंगेना। परन्तु इनकी मत भी लेते नहीं हैं फिर भीपुरानी सड़ी हुई मनुष्य मत पर चलते हैं। देखते भी हैं शिव बाबा इस रथ से आकर मत देते हैंफिर भी अपनी मत पर चलते हैं। जिसको पाई पैसे की मत पर चलते हैं। रावण के मत पर चलते2इस समय कौड़ी तिल बन गये हैं। अभी रात शिव बाबा मत देते हैं। निश्चय में ही विजय है। इसमें कब नुकसान नहीं होगा। नुकसान को भी बाप फायदा करा देंगे। परन्तु निश्चय बुधि वालों को। संशय बुधि वाले और ही घूटका खाते रहेंगे। निश्चय बुधि वाले कब घूटका नहीं खावेंगे। समझेंगे शिव बाबा इस रथ पर बैठा है। वह मत दे रहे हैं। पक्के निश्चय बुधि वाले कब घाटा पड़े न मरें। बाबा खुद गैरन्टी करते हैं। कई बच्चे सुनते हैं पता नहीं यह मत इनकी है वा शिव बाबा की। यह तो कहते हैं हमेशा शिव बाबा की ही मत समझो। फिर भी कहे मुझे यह मत पसन्द नहीं है तो अपनी मत पसन्द है। मनुष्य मत को देहधारी की मत कहा जाता है। देहीअभिमानी की मत आधा कल्प थी। वहां दुःख की बात नहीं होती। यहां तो है मनुष्य मत। गाया भी जाता हैमनुष्य मत, ईश्वरीय मत-दैवी मत। अभी तुम समझते हो ईश्वरीयमत हमको मिलती है। जिस ईश्वर की श्रीमत से तुम मनुष्य से देवता बनते हो। फिर वहां स्वर्ग में तो सुख ही पाते हो। कोई दुःख की बात नहीं। वह सभी स्थाई सुख रह जाताहै। इस समय तुमको फीलिंग में लाना होता है। भविष्य का फीलिंग आती है। अभी यह है पुरुषोत्तम संगम युग। जब कि श्रीमत मिलती है। बाप कहते हैं मैं कल्प कल्प के संगम युग पर आता हूं। उसको तुम ही जानते हो। उनके मत पर चलते हो। बाप कहते हैं बच्चे गृहस्थ व्यवहार में भल रहो। कौन कहता है तुम कपड़ आदि बदली करो। भल कुछ भी पहनो, बहुतों से कनेक्शन में आना पड़ता है। रंगीन कपड़ों के लिये मना नहीं करते हैं। कोई भी कपड़ा पहनो। इनसे तुम्हारा कोई तेलक नहीं। बाप सिर्फ कहते हैं देह सहित देह के सभी सम्बन्ध छोड़ो।... बाकी पहनो भल कुछ भी। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ यह पक्का निश्चय करो। यह भी जानते हो आत्मा ही पतित, और पावन बनती है। कहेंगे पतित आत्मा है, यह पावन आत्मा है। महात्मा को भी महान आत्मा कहेंगे ना। महान परमात्मा कब नहीं कहेंगे। खुद भी कहते हैं महान आत्मा। महान परमात्मा अक्षर तो कब सुनाई होगा। परन्तु इतने तमोप्रधान बुधि मनुष्य हैं जो इतनी बातों को समझते ही नहीं हैं। महान परमात्मा कहना तो शोभता नहीं। पूज्य परमात्मा कब नहीं कहते। इतनी सहज बात भी जब कोई समझावे। तुम यह कह कैसे सकते कि ईश्वर सर्वव्यापी है। खुद कहते हो पापात्मा, पुण्यात्मा। तो परमात्मा तो अलग हुआ ना। कितनी अच्छी बातें हैं समझने की। सद्गुरु, सर्व की सद्गति देने वाला तो एक ही बाप है। वहां कब अकाले मृत्यु होती नहीं। अभी तुम बच्चे समझते हो बाबा हमको फिर से ऐसा देवता बनाते हैं। आगे यह बुधि में नहीं था। कल्प की आयु कितनी है यह भी नहीं जानते थे। अभी तो सारी स्मृति आई है। यह भी बच्चे समझते हैं आत्मा को

पापात्मा और पुण्यात्मा कहा जाता है। बाप परमात्मा तो कब नहीं कहा जाता। फिर कोई कहे परमात्मा सर्व-व्यापी है तो यह कितनी बेसमझ है। यह बाप ही बैठ समझाते हैं। अभी तुम समझते होहर 5000 वर्ष बाद बाप आकर पापात्माओं को पुण्यात्मा बनाते हैं। एक को नहीं, सभी बच्चों को बनाते हैं। बाप कहते हैं तुम बच्चों को बनाने वाला मैं ही बेहद का बाप हूं। जरूर बच्चों को बेहद का सुख दुंगा। सतयुग में होते ही हैं पवित्र आत्मायें। रावण पर जीत पाने से ही तुम पुण्यात्मा बन जाते हो। तुम फील करते हो माया कितनी विघ्न डालती हैं। एकदम नाक में दम कर देती है। तुम समझते हो माया से युद्ध कैसचलतीहै। उन्होंने फिर पाण्डवों और कौरवों की युध दिखाई है। लश्कर आदि क्या2 बैठ दखाते हैं। इस युध का किसको भी पता नहीं हैं। यह है गुप्त। इनको तुम्हीं अब जानते हो। माया से इस आत्माओं को युध करनी है। बाप कहते हैं सबसे ड़ा दुश्मन तुम्हारा है ही काम। योगबल से तुम इस पर जीत पाते हो। योगबल का अर्थ भी कोई नहीं समझते। जो बिल्कुल सतोप्रधान थे वही फिर बिल्कुल तमोप्रधान बने हैं। बाप खुद कहते हैं बहुत जन्मों के अन्त में मैं प्रवेश करता हूं। वही तमोप्रधान बना है। तत त्वम्। बाबा एक को थोड़ेही कहेंगे। नम्बरवार सभी को कहते हैं। नम्बरवार कौन2 हैं यहां तुमको पता पड़ता है। आगे तुमको बहुत पता पड़ेगा। माला का तुमको साक्षात्कार करावेंगे। स्कूल में जब ट्रन्सफर होते हैं तो सभी को मालूम पड़ जाता है ना। रिजल्ट सारी निकल जाती है। बाबा ने बच्ची से पूछा था तुम्हारा पेपर कहां से आते हैं? बोली लन्दन से। अब तुम्हारे पेपर कहां से निकलेंगे? ऊपर से। तुम्हारा पेपर ऊपर से आवेगा। सभी सा० करेंगे। कैसी वन्डरफुल पढ़ाई है, कौन पढ़ाते हैं, किसको पता नहीं हैं। कृष्ण भगवानुवाच कह देते हैं। पढ़ाई में सभी नम्बरवार हैं तो खुशी भी नम्बरवार होगी। यह जो गायन है अति ईन्द्रिय सुख गोप-गोपियों से पूछो। यह पिछाड़ी की बात है। बापने समझाया है भल बाबा जानते हैं यह बच्चे कब गिरने वाले नहीं हैं परन्तु फिर पता नहीं क्या हुआ है। पढ़ाई ही नहीं पढ़ते हैं। तकदीर में नहीं है। थोड़ा ही उनको कहाजाये जाकर अपना घर बसाओ उस दुनिया में। तो झट चले जावेंगे। कहां से निकल कहां चले जाते हैं। उनको चलन, बोलना करना ही ऐसा होता है, समझते हैं हमको अगर इतना मिले तो हम जाकर अलग रहें। चलन से ही समझा जाताहै। बाप कोई अन्तर्यामी नहीं है उनकी चलन से ही समझा जाता है। इसका मतलब निश्चय नहीं है। लाचारी बैठे हैं। बहुत हैं जो ज्ञान को रिंचक भी नहीं जानते। कब बैठते भी नहीं। माया पढ़ने ही नहीं देती है। ऐसे सभी सेन्टर्स पर होते हैं। कब पढ़ने आवेंगे ही नहीं। वन्डर है ना। कितनी ऊंची नालेज है। भगवान पढ़ाते हैं, कुछ तो बचन सुनो ना। बिल्कुल ही नहीं आवेंगे। बाबा कहे यह काम न करो मानेंगे नहीं। जरूर उल्टा काम कर के दिखावेंगे। राजधानी स्थापन हो रही है इस में तो हर प्रकार की चाहिए ना। ऊपर से लेकर नीचे तक सभी बनने हैं। मर्तबे में फर्क तो रहता है ना। यहां भीनम्बरवार मर्तबे हैं। सिर्फ फर्क क्या है वहां आयुवड़ी और सुख रहता है। यहां आयु छोटी और दुःख है। बच्चों की बुधि में यह वन्डर बातें हैं, कैसा यह ड्रामा बना हुआहै। फिर कल्प2 हम वही पार्ट बजावेंगे। कल्प कल्प बजाते रहते हैं। इतनी छोटी आत्मा में कितना पार्ट भरा रहता है। वही फिचर्स, वही एक्टिविटी। यह सृष्टि का चक्र फिरता ही रहता है। बनी बनाई बन रही .... यह चक्र फिर भी रिपीट होगा। सतोप्रधान सतो रजो तमो में आवेंगे। यह ड्रामा का चक्र फिर भी फिरता रहता है* हू बहू। इसमें सुंझने की तो बात ही नहीं। अच्छा अपन को आत्मा समझते हो। ब्रह्मा का बाप शिव बाबा है यह तो समझते हो ना। जो सतोप्रधान बनते हैं वही फिर तमोप्रधान बनते हैं। 84 जन्म भी मानते हो, फिर सतोप्रधान बनने से ही तुम वह देवी देवता बनेंगे। बाप को याद करो तो सतोप्रधान बन जावेंगे। यह तो अच्छा है ना। बस यहां तक ही ठहरा देना चाहिए। बोलो बेहदका बाप यह स्वर्ग का वरसा देते हैं। वही पतित-पावन है। बाप नालेजदेते हैं। इसमें शास्त्र आदि की तो बात ही नहीं। शास्त्र शुरू में कहां से आवेंगे। यह तो जब बहुत हो जाते हैं तब बाद में शास्त्र बनाते हैं। सतयुग में शास्त्र होते ही नहीं। परमपरा तो कोई चीजहोती नहीं। नाम रूप तोबदल जावेगा। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग। नमस्ते।